गाँधी जी के विचार

गाँधी जी के नीति–सिद्वान्त एवं सामाजिक उपयोगिता

गाँधी जी अपने जीवन में प्रमुख राजनीतिज्ञ व समाज सुधारक थे। नवीन वर्धा शिक्षा पद्धति के संस्थापक, पिछड़े वर्गों के लिए समर्पित मसीहा, पूंजीवादी एवं साम्यवाद से भिन्न एक अहिंसात्मक समाजवादी समाज की स्थापना के प्रणेता, उच्च दार्शनिक थे। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुमुँखी एवं विशाल था। उनका सम्पूर्ण सामाजिक दर्शन नैतिक सिद्वान्तों पर आधारित था, जो धर्म, नैतिकतता को महत्व देता है। अतः आवश्यक है कि उनके नैतिक सिद्वान्तों को समझा जाए। जिनका उद्देश्य व्यक्ति को अनुशासित, संयमित आत्मा एवं ईश्वर का अनुभव तथा वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के अंतर को मिटाने के लिए किया गया था।

सत्य (Truth)- गाँधी जी ने लिखा था–''सत्य धर्म और सच्ची नैतिकता एक–दूसरे से अपृथक रूप से बंधे हुए हैं। धर्म का नैतिकता से वही संबंध है, जो भूमि में बोये हुए बीज के साथ जल का है। ऐसा कोई धर्म नहीं होता, जो नैतिकता का अनुकरण कर सके।'' सत्य और अहिंसा भारतीय संस्कृतिक का मूल आधार है। सत्य को शब्दों में बाँधना कथन है। अतः गाँधी जी के मतानुसार अन्तर आत्मा की आवाज ही सत्य है। इसके अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है। उन्होंने लिखा है–''मेरे विश्वास अनुभव ने मुझे आस्वस्त किया है कि सत्य के अलावा और दूसरा ईश्वर नहीं है.....सत्य की प्राप्ति का एकमात्र साधन अहिंसा है।'' सत्य को गाँधी जी का पहला नैतिक सिद्वान्त माना जाता है। सत्य शब्द सत् से बना है जिस का तात्पर्य है– यथार्थ सत्ता जो संसार का संचालक करती है। गाँधी जी ने हमेशा इसको पहुँचाने व अनुकरण की बात कही है। इसका संबंध व्यक्ति यथार्थ में सत्ता को पहचानने की क्षमता को विकसित करना है। जैसा कि गाँधी जी ने लिखा भी है–''यह सत्य शाब्दिक सत्य से नहीं है, बल्कि विचारों की सत्यता से संबंधित है। यह केवल हमारी अवधारणाओं का सापेक्ष सत्य नहीं, अपितु निरपेक्ष सत्य, सनातन सिद्वान्त है जो कि ईश्वर है।'' गाँधी जी ने सत्य व असत्य को समझने के लिए सत्य–असत्य दो प्रकार की अवधारणाओं को व्यक्त किया है–

क) सत्य– शुद्व आत्मा की वाणी ही सत्य कता अधार है,जो ब्रह्म है, ईश्वर है व संसार में टिकाऊ है, जो यथार्थ सत्ता के नमा से प्रचलित हैं

ख) असत्य– असत्य वह है जो संसार में नहीं टिकता, जो न तो यथार्थ है और नहीं धारण करने योग्य है।

उनका मानना था कि कोई भी व्यक्ति चाहे आस्तिक हो या नास्तिक, सत्य की इस सत्ता से इन्कार नहीं कर सकता। इसी सत्य पर सृष्टि आधारित है, जिसे आधार बनाकर गाँधी जी ने 'सत्याग्रह' के सिद्वान्त को प्रतिपादित किया। दादा धर्माधिकारी ने भी गाँधी जी की सत्य की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए लिखा है–''सामाजिक मूल्य के रूप में जब हम सत्य की उपासना करते हैं तो ध्रुव सत्य हमारे लिए यह है कि दूसरे व्यक्ति और मैं एक हूं। मेरा दूसरों के साथ एकता, मेरी सामाजिकता, मेरी नैतिकता व सदाचार का आधार है जो दूसरों के साथ हमारी परमार्थिक एकता है।''

उपर्युक्त आधार पर कहा जा सकता है कि गाँधी जी के सत्य का सिद्धान्त विचारों की सत्यता, निरपेक्ष, सनातन व ईश्वर से जुड़ा है, जिसमें अन्तरात्मा की आवाज सुनने, अहिंसा को अपनाने, मन, वचन, कर्म से निर्विकार व शुद्धिकरण पर बल दिया है।

अहिंसा (Ahinsa or Non violence)- सत्य प्राप्ति गांधी जी का लक्ष्य व अहिंसा उनके लिए साधन था, वे अहिंसा को जीवन की सबसे बड़ी शक्ति मानते थे, जो जीवन को हिंसा से मुक्त रखती हैं। उनके अनुसार अहिंसा के बिना सत्य की खोज व ईश्वर प्राप्ति का स्वप्न अधूरा है। गाँधी जी के अनुसार–हिंसा कायरता का अस्त्र नहीं है, बल्कि व्यक्ति की सबलता का सशक्त प्रतीक है। अहिंसा कायर का कवच नहीं, बल्कि बहादुर का उच्चतम गुण है। किसी भी व्यक्ति के लिए कुविचार रखना ही हिंसा है।''सामान्य रूप से अहिंसा को सकारात्मक (Positive) एवं नकारात्मक (Negative) दो रूपों में देखा जाता है। गाँधी नकारात्मक रूप से पृथक है और सकारात्मक अहिंसा को अपनाते हुए उसके गुणों को बिजली से अधिक तेज और ईश्वर से भी अधिक शक्तिशाली रूप में वर्णित करता है। अतः ऊँची से ऊँची हिंसा का विरोध ऊँची से ऊँची अहिंसा के द्वारा किया जा सकता है।

अहिंसा के तत्व (Essential Elements of Non violence)

गाँधी जी द्वारा प्रस्तुत अहिंसा के सिद्धान्त के आधार पर अहिंसा के आवश्यक तत्वों की चर्चा निम्नवत् **है** –

1) सत्य (Truth)- सत्य अहिंसा का पहला आवश्यक व महत्वपूर्ण तत्व है जो स्वयं में ब्रह्म है। परमात्मा है, ईश्वर है, जिसकी प्राप्ति मानव जीवन का अन्तिम उद्देश्य है।

2) प्रेम (love)- सभी जीवधारियों के साथ प्रेम की भावना व व्यवहार की आवश्यकता को गाँधी जी महत्वपूर्ण मानते थे, प्रेम जिसमें सत्य का होना नितान्त आवश्यक है। सबसे बड़ी अहिंसा है। गाँधी जी ने लिखा है–''प्रेम कभी कोई चीज पाने का इच्छुक नहीं होता। वह सदा कुछ देता है। यह सदा मुसीबतें सहन करता है। कभी घृणा नहीं करता, कभी बदला नहीं लेता।''

3) आन्तिरिक पवित्रता (inner purity)- अंतरात्मा की शुद्धता एवं पवित्रता अहिंसा का तीसरा तत्व हैं। जहाँ आन्तरिक पवित्रता के अन्तर्गत आत्मा–अनुशासन, नम्रता जैसे गुणों को सम्मिलित किया जाता है, क्योंकि इसी के आधार पर व्यक्ति स्वयं को अहिंसा के लिए प्रेरित करता है। डॉ0 सुशील नायर ने लिखा है–''आन्तरिक पवित्रता वह चट्टान है जिस पर एक सत्याग्रही को खड़ा होना चाहिए, ताकि वह अपने शत्रु के हदय को प्रभावित कर सके और उनके अन्दर निहित मानवीय तथा ईश्वरीय शक्ति चिंगारी को प्रज्जवलित कर सके।''

4) लगन (persevernance)- अहिंसा के लिए लगन का होना नितान्त आवश्यक है। गाँधी जी मानते थे कि व्यक्ति को किसी भी कार्य को केवल सफलता की लालसा से नहीं करना चाहिए, क्योंकि सफलता का मार्ग प्रशस्त करने पर कई बार असफलता का सामना करना पड़ता है, ऐसी स्थिति में अटूट लगन ही सफलता प्राप्ति की अनिवार्यता है।

5) भयहीनता (Fearlessness)- अहिंसा को एक सक्रिय शक्ति के रूप में स्वीकार करते हुए गाँधी जी मानते थे कि अहिंसा एक सतत् क्रियाशीलता शक्ति है, जिसमें सत्यता का पालन करने के लिए निडरता या भयहीनता का गुण होना आवश्यक है। अहिंसा बहादुरों का अस्त्र है, कायरता से अहिंसा में वजह पाना असंभव है।

6) लालच का न होना (Non Possession)- गाँधी जी के अहिंसा के प्रमुख तत्वों में व्यक्ति का लालची प्रवृति से दूर रहना भी एक है। लालच जहाँ व्यक्ति के आत्मविश्वास को क्षीण करता है, वहीं अपराधिक प्रवृत्ति को जन्म देकर व्यक्ति को पदभ्रष्ट भी कर देता है।

7) व्रत (fasting)- गाँधी जी के अनुसार व्रत केवल व्यक्ति में नियम व अनुशासन को संचालित नहीं करता, बल्कि शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक पवित्रता का विकास करता है, और जिनमें इस प्रकार की पवित्रता निहित होती है। वह अहिंसा के सिद्धान्त का आसानी से पालन करने में सक्षम होता है।

उपरोक्त आधार पर गांधी जी के अहिंसा के सिद्धान्त को निष्कर्षतः निम्नवत् समझा जा **सकता है**

- अहिंसा के लिए आत्मबल की शक्ति आवश्यक है।
- अहिंसा आन्तिरिक शक्ति के रूप में प्रयुक्त होकर आत्मा को विकसित करती है।
- अहिंसा मानव जीवन का उच्चतम आदर्श है, जिसको प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को निरन्तर प्रयत्नशील होना चाहिए।
- अहिंसा के लिए सत्य, प्रेम आन्तरिक पवित्रता, लगन, निडरता, लालची प्रवृत्ति का न होना तथा व्रत के आधार पर शारीरिक, मानसिक व आत्मिक पवित्रता को विकसित करना आवश्यक है।
- अहिंसा बुद्धि को नहीं हृदय को पवित्र करती है।
- अहिंसा जीवन का एक नियम है।

<u>सत्याग्रह का अर्थ (Meaning of Satyagrah)</u>

व्यक्ति के जीवन की अनेक आवश्यकताएँ तथा समस्याएँ होती हैं। जिनकी पूर्ति विभिन्न उद्देश्यों के आधार पर की जाती है। इन उद्देश्यों को कैसे पूरा किया जाए। इस संबंध में विभिन्न विद्वान अपनी अलग–अलग राय रखते हैं। इनमें से गाँधी जी भी एक है जिनका मानना है कि अहिंसा का व्यवहारिक रूप सत्याग्रह है। जिसके आधार पर लक्ष्य तक पहुँचना आसान हो जाता है। साथ ही लक्ष्य तक पहुँचने के लिए क्रान्ति को भी गाँधी जी ने आवश्यक मानते हुए सत्याग्रह को उसका मुख्य शस्त्र बतलाया है।

सत्याग्रह दो शब्दों से मिलकर बना है– सत्य और आग्रह। अर्थात् सत्य का आग्रह करना, सत्य पर दृढ़ रहना ही सत्याग्रह है, जिसकी उत्पत्ति के लिए अपनी पत्नी को कारक माना है। उन्होंने लिखा है–''मैंने अपनी पत्नी से सत्याग्रह का पाठ पढ़ा। मैंने उसे अपनी इच्छा के सामने झुकाने का प्रयास किया। उसमें एक ओर मेरी इच्छाओं का दृढ़तापूर्वक विरोध किया और दूसरी ओर मेरी मूर्खता के लिए मूक रहकर कष्ट सहन किया। मुझे अन्त में अपने आप में शर्म आने लगी और अपने इस विचार का कि मेरा जनम ही उस पर हुकूमत चलाने के लिए हुआ है, मुझे पागलपन दिखायी देने लगा।अन्त में अहिंसा के मामले में वह मेरी गुरू बनी और अनजाने में ही उसने जिस सत्याग्रह का अवलम्बन किया। उसी के नियमों का विस्तार मात्र मैंने दक्षिण अफ्रिका में किया।

सत्याग्रह के तत्व (elements of satyagrah)

यहाँ पर गाँधी जी के सत्याग्रह में निहित तत्वों की चर्चा करेंगे–

1) **सत्य एवं अहिंसा (Truth and Non Violence) -** गाँधी जी ने सत्याग्रह के पहले तत्व के रूप में सत्य की शक्ति व दूसरे के रूप में अहिंसा को आधार माना है। उनका मानना था कि सत्याग्रही को हमेशा यह विश्वास होना चाहिए कि वह सत्य के लिए लड़ रहा है। वह सत्य जो ईश्वर का रूप है, प्रेम है, न्याय है, क्योंकि सत्य सामाजिक क्रिया पर आधारित है। ऐसे ही अहिंसा के तत्व को प्रस्तुत् कर उन्होंने लिखा है–यह एक ऐसा सकारात्मक व्यवहार है जो सत्य प्राप्ति का लक्ष्य है। इसके अन्तर्गत किसी के विचारों को मन को व शरीर को किसी प्रकार का कष्ट एवं आघात न पहुँचाना, प्रेम व स्नेह के भाव को सम्मिलित किया गया है।

2) **आत्मपीड़ा (self Torture)-** सत्याग्रह प्रेम पर आधारित है जिसे पाने के लिए व्यक्ति को समझौता, कष्ट व आत्मपीड़ा अनिवार्य हो जाती है। प्रेम की परीक्षा, त्याग व बलिदान से होती है और तपस्या का अर्थ स्वयं को कष्ट भुगतने के लिए सर्वदा तत्पर रखना, आत्मपीड़ा में भी संतुष्टि का होना है। आत्मपीड़ा से तत्पर व्यक्ति निडर व निर्भीक होता है, जिसमें मृत्यु से सामना करने की क्षमता होती है। गाँधी जी ने लिखा है–''प्रेम कभी मांग नहीं करता, वह हमेशा देता है, प्रेम कष्ट सहता है, कभी शिकायत नहीं करता है और न ही बदला लेता है।'' अतः सत्याग्रह एक धर्मयुद्ध है, जिसमें भगवान की सहायता आवश्यक है, जो आत्मपीड़ा, अहिंसा तथा सत्याचरण द्वारा ही प्राप्त हो सकता है।

सत्याग्रह के लक्षण (qualities of satyagarh)-

सत्याग्रह के प्रमुख दस लक्षणों को गाँधी जी द्वारा प्रस्तुत् किया गया है –

1) अहिंसा (Non violence)- दूसरों की आत्मा को दुखी न करना।

2) सत्य (Truth)- दूसरों के साथ हमारी परमार्थ एकता।

3) अस्तेय (Non Stealing)- यद्यपि यह नियम भी सहायक नियम है, तथापि सामाजिक संगठन की दृष्टि से इसका अत्यधिक महत्व है। व्यक्ति में आत्मसंतोष होना आवश्यक है, क्योंकि आत्मसंतोष ही अस्तेय की प्राप्ति का प्रतीक है। सामान्यतया दूसरे की अनुमति के बिना उसकी वस्तु को उठाना या उपयोग करना तो चोरी है ही, लेकिन यदि कोई व्यक्ति अपनी आवश्यक जरुरतों से अधिक वस्तुओं की आकांक्षा करता है। उनके लिए प्रयत्न करता है तथा उनको अपने पास रखता है तो वह भी एक प्रकार का चोरी है। आवश्यकता से अधिक अपने पास रखने का अभिप्राय हम दूसरों के अधिकार की वस्तु में हाथ डाल रहे हैं, जिसको कि इसकी जरूरत है। दूसरे की वस्तु के लिए इच्छा ही न करना, जरूरत से अधिक वस्तुओं को समेटना अस्तेय है। अतः कहा जा सकता है कि अस्तेय एक वृत्ति और प्रवृत्ति भी है। यह एक निष्ठा है। केवल आचरण नहीं। वृत्ति और आचरण की समानता के साथ अपने ही श्रम से प्राप्त वस्तु के अतिरिक्त अन्य किसी व्यक्ति की वस्तु की आकांक्षा न करना ही अस्तेय है।

4) ब्रह्मचर्य (Brahmcharya)- ब्रह्मचर्य को गांधी जी ने सत्य–अहिंसा के लिए आवश्यक माना है। इसके प्रति उनकी धारणा सामाजिक थी। वे सार्वभौमिक प्रेम पर विश्वास करते थे, जिसमें प्रेम की सीमा स्त्री–पुरुष तक ही सीमित न रहकर सबके लिए होनी चाहिए। उनके अनुसार ये तभी संभव है, जब लैंगिग सुखों का प्रयोग या उपभोग दायरे के अन्तर्गत होगा। परिवार में स्त्री की अवस्था मातृत्व की भावना से सम्पन्न होनी चाहिए, जिससे उसमें त्याग वृत्ति का विकास हो। स्त्री

को व्यक्तिनिष्ठ न होकर तत्वनिष्ठ होना चाहिए। स्त्री के सहजीवन की नींव पवित्रता पर होनी चाहिए। पुरुष की वृत्ति स्त्री के प्रति अनाक्रमणशीलता की होनी चाहिए और स्त्री की निर्भीकता की। यही जीवन का आधार है। ब्रहमचर्य है, जो समाज के पतन के रास्ते से बचाने के लिए आवश्यक है।

5) अपरिग्रह (Aparigarh) गाँधी जी का विचार है कि व्यक्ति्त एवं समाज की सुख शान्ति परिग्रह या संचय करने में नहीं है, अपितु विचारपूर्वक एवं स्वेच्छा से संग्रह की हुई है। वस्तुओं, सम्पत्ति या सुख–सुविधाओं का त्याग करने में सच्ची शान्ति व सुख है, ज्यों–ज्यों परिग्रह कम होता है, मानव चिन्ताएँ कम होती जाती है तथा सच्चे सुख व शान्ति प्राप्त होती है। जहाँ ऐसा करने से व्यक्ति की आत्मा को सच्चा सुख मिलता है। वहीं समाज में धन का समान वितरण, गरीबी, भूखमरी आदि की भी समाप्ति होती है और समाज में प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता पूरी होने लगती है। परिग्रह का त्याग आवश्यक है, क्योंकि यह सभी बुराईयों की जड़ है।

6) शारीरिक श्रम (Physical labour)- शारीरिक श्रम के सिद्धान्त के आधार पर मनुष्य को जीवित रखने के लिए श्रम आवश्यक है जो कि मस्तिष्क से नहीं शरीर से होना चाहिए। काम और आराम के बीच का अन्तर संघर्ष का कारण होता है, जिसे दूर करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक श्रम आवश्यक करना चाहिए। हम जो कार्य कर सकते हैं, उसे स्वयं करना चाहिए। सामाजिक दृष्टि से भी यदि हम अपनी आवश्यकतानुसार के अनुमाप में कार्य करके खा लेते हैं तो इससे समाज में व्याप्त समस्याओं का भी समाधान हो जायेगा। पूंजीपति व श्रमिकों के बीच पाया जाने वाला संघर्ष कम होगा तथा समाज में न्याय की स्थापना होगी और शोषण कम होगा। गाँधी जी के अनुसार–'व्यक्ति को धन निष्ठ न होकर श्रमनिष्ठ होना चाहिए।'

7) अस्वाद (Tastelessness)- शारीरिक श्रम के बदले कुछ प्राप्त करने की कामना अस्वाद है। दूसरों को खिलाकर खाना, उत्पादन पर स्वयं की जगह समाज का अधिकार मानना, आनन्द की छाया दूसरे की आँखों में देखकर आनन्दित होना अस्वाद है। अर्थात् पहले दूसरों को वितरित हो फिर यदि बचे तो मैं लूं यही भावना अस्वाद कहलाती है। गाँधी जी के अनुसार–''भोजन शरीर की आवश्यकता के लिए नहीं होना चाहिए। न कि स्वाद के लिए। यदि हम अपनी पाश्विक वृत्तियों एवं कामनाओं पर विजय पाना चाहते हैं तो हमें स्वाद का त्याग करना होगा।

8) स्वदेशी (Swadeshi)- स्वालम्बन व्यक्ति के लिए अत्यंत आवश्यक व्रत है। गाँधी जी ने कहा है–''स्वदेशी ऐसी भावना है जो हमें आस–पास रहने वाले लोगों की सेवा के लिए प्रेरित करती है, जो व्यक्ति अपने निकट वालों को छोड़कर दूर वालों की सेवा के लिए दौड़ता है। वह स्वदेशी व्रत को भंग करता है। स्वयं उत्पादित वस्तुओं का प्रयोग हमारा स्वाभिमान है। ऐसी भावना सत्याग्रह के लिए आवश्यक है।

9) स्पर्श भावना (Touchability)- गाँधी जी के अनुसार जाति–वर्ण के बन्धन से उत्पन्न ऊँच–नीच के आधार पर पलने वाली अस्पृश्यता का सर्वोदय समाज व्यवस्था में कोई स्थान नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे को अपने बराबर समझे तथा प्रत्येक व्यक्ति में स्पर्श की भावना का उदय होना चाहिए। सभी मनुष्य समान है। अतः किसी के भी उचित तरीके से जीने का अधिकार को छीनने का किसी को हक नहीं है।

10) धार्मिक समानता (Religious Equality)- विभिन्न सम्प्रदायों का निराकरण कर देना धार्मिक समानता है। गाँधी जी के अनुसार सभी धर्मों के मूल सिद्धान्त एक है, जिसका उद्देश्य सभी धर्मों को आदर की दृष्टि से देखना है। यदि इस प्रक्रिया को जीवन में लागू किया जायेगा तो धर्म परिवर्तन की समस्या का भी अन्त हो जायेगा।

संक्षेप में गाँधी जी ने सत्याग्रह को 'क्रान्ति का विज्ञान' कहा है। सत्याग्रह के लिए उपरोक्त लक्षणों का पालन अनिवार्य है जो एक–दूसरे से किसी–न–किसी प्रकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं।

सत्याग्रह की विधियाँ (Methods of satyagrah)

गाँधी जी **के द्वारा** सत्याग्रह में जिन विधियों का उल्लेख किया गया है, वे इस प्रकार हैं–

1. हड़ताल 2 उपवास 3. प्रार्थना 4. प्रतिज्ञा 5. असहयोग 6. करबन्दी 7. धरना 8. सविनय अवज्ञा 9. अहिंसक धावे 10. आमरण अनशन 11. अपनी इच्छा से सरकारी सीमा छोड़ना।

सत्याग्रह का प्रयोग: सामान्यतया यह माना जाता है कि सत्याग्रह का प्रयोग केवल शत्रुओं पर ही किया जाना गलत है। गाँधी जी के अनुसार–यदि सत्याग्रह न्याय और सत्य पर आधारित है तो इसका प्रयोग परिवार के सदस्यों, मित्रों, पड़ोसियों, साथियों, यहाँ तक कि संसार के विरुद्ध तक किया जा सकता है। सत्याग्रह अलौकिक शक्ति है, जो जाति, धर्म, लिंग, सम्प्रदाय, क्षेत्र आदि किसी आधार पर भेदभाव नहीं करता। अतः सत्याग्रह एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है, जिसका प्रयोग सभी व्यक्तियों, सभी स्थितियों में किया जाता है।

सत्याग्रह का मूल्यांकन

गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित सत्याग्रह के सिद्वान्त का मूल्यांकन निम्नवत् किया जा **सकता** है–

1) व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में महत्व (Importance of Indivisual and social life)- सत्याग्रह के प्रमुख तत्वों, विशेषताओं के आधार पर माना जा सकता है कि यदि व्यक्ति इनका अनुसरण करेगा, या जीवन में इन्हें आमसात् करेगा तो न केवल व्यक्ति के स्वयं के जीवन में, बल्कि सम्पूर्ण समाज में इसका महत्व होगा।

2) समाज का पुर्ननिर्माण (Reconstruction of society)- सत्याग्रह के सिद्धान्तों को जीवन में लागू कर व्यक्ति नकारात्मक से सकारात्मक प्रवृत्ति की ओर अग्रसारित होता है। गाँधी जी द्वारा वर्णित नये व नैतिक विचारों के आधार पर समाज का पुर्ननिर्माण भी संभव है।

3) सामाजिक अनुशासन व नैतिकता में वृद्धि– अनुशासन व संयम सक्षम व्यक्तित्व व सामाजिक व्यवस्था के लिए आवश्यक है, जिसकी सहायता से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में व्याप्त दुष्परिणामों को समाप्त किया जा सकता है।

4) मानवता के प्रति प्रेम (Love for humanity)- सत्याग्रह एक ऐसा सिद्धान्त जिसमें मानवता के प्रति प्रेम के दर्शन होते हैं, जिससे समाज में स्नेह एवं सहयोग की भावना विकसित होती है और इस प्रकार समाज की प्रगति को प्रोत्साहन मिलता है।

अतः स्पष्ट है कि गाँधी जी में सौजन्यता, नम्रता, सत्य व अहिंसा के प्रति अटल विश्वास था, इसीलिए उन्होंने विश्व को विशेषकर भारत को सत्याग्रह के आधार पर नया मार्ग दिखलाया। श्रीमन्ननारायण ने लिखा है–'सत्याग्रह की बुनियाद भी साधन शुद्धि।' गाँधी जी को यह विश्वास था कि हमको हमारा शुद्ध साध्य अशुद्ध व अपवित्र साधनों द्वारा कभी प्राप्त नहीं हो सकता। उनके अनुसार– ''जैसे साधन होंगे वैसे ही साध्य होंगे, जैसा बीज वैसा ही वृक्ष होंगे।'

5) सत्याग्रह (Satyagarh)- समाजशास्त्र के सिद्धान्त के अंतर्गत सत्याग्रह का अध्ययन किया जाता है। इसका कारण है कि समाज सामाजिक संबंधों की एक व्यवस्था है और सत्याग्रह इन्हीं संबंधों में मधुरता व अनुकूलता को विकसित करता है। यद्यपि सत्याग्रह का प्रयास गांधी जी ने व्यक्तिगत

जीवन में किया था, लेकिन इसका संबंध केवल व्यक्ति तक सीमित न होकर एक सार्वज्ञानिक व व्यवहारिक सिद्धान्त के रूप में सामाजिक जीवन में भी है। सत्याग्रह की प्रक्रिया को अपनाकर समाज में व्याप्त असत्य, अन्याय, शोषण को समाप्त किया जा सकता है तथा सहयोग, सहकारिता, सद्भाव जैसी भावनओं को विकसित कर सामाजिक व्यवस्था को एक व्यवस्थिति रूप प्रदान किया जा सकता है। सामाजिक जीवन इन्हीं महान सिद्धान्तों पर टिका हुआ है जो व्यक्तिगत जीवन की अपेक्षा सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन में प्रयोग किया जा सकता है। सत्याग्रह केवल सिद्धान्त की बात नहीं है, अपितु गाँधी जी ने इसका व्यवहारिक जीवन में भी प्रयोग किया है और पाया है कि इसकी सहायता से अन्याय व प्रतिकार को भी समाप्त किया जा सकता है। इस सिद्वान्त की मौखिक बात यह है कि इसका प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी किया जा सकता है।